उपशास्त्री, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि० - पत्र
दिगंत - भाग - 2 गद्य भाग
शीर्षक - उसने कहा था
लेखक - चन्द्रधर शर्मा गुलेरी

प्रश्न:- पाठ में लहना सिंह और सूबेदारनी के संवादों को एकत्र करें।

उत्तर:- 'उसने कहा था' शीर्षक कहानी में लहना सिंह और सूबेदारनी के बीच हुए संवादों को कहानीकार ने रोचक ढंग से प्रस्तुत किया है। लहना सिंह सात दिन की छुट्टी लेकर घर आया हुआ था। सूबेदार के आग्रह पर वह लौटते समय वह सूबेदार के यहाँ होते हुए आया। सूबेदार की पत्नी ने उसे पहचान लिया। सत्ताइस साल पहले बारह वर्ष की आयु में लहना सिंह की भेंट एक आठ वर्ष की बालिका (अब सूबेदार की पत्नी) से अपने मामा के यहाँ भेंट हुई थी। आज वह सूबेदार की पत्नी है।

उसी समय सूबेदार की पत्नी कहती है- " मैंने तेरे को पहचान लिया। एक काम कहती हूँ। मेरे तो भाग फूट गए। एक बेटा है। फौज में भरती हुए उसे एक ही वर्ष हुआ। अब दोनों जाते हैं, मेरे भाग। तुम्हें याद है एक दिन टाँगेवाले का घोड़ा दही वाले के दुकान के पास बिगड़ गया था। तुमने उस दिन मेरे प्राण बचाए थे। आप घोड़े की लातों में चले गये थे और मुझे उठाकर दूकान के तख्ते पर खड़ा कर दिया था। ऐसे ही इन दोनों को बचाना। यह मेरी भिक्षा है। तुम्हारे आगे मैं आँचल पसारती हूँ।" सूबेदारनी तथा लहना सिंह दोनों की आँखों में आँसू आ गये।" लहना सिंह ने उसकी मौन स्वीकृति आँसुओं में ही दे दी तथा अपने प्राणों की बलि देकर अपने प्रण का पालन किया।

डॉ० देवचरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० ज० सं० महावि० सुरवसेना, पूर्णियाँ
30.03.20

सामर्थ्य हो वह सब कुछ अपने ही न हजम कर जाँय। थोड़ा बहुत दूसरों को भी दें और अपने तथा अपनों की परवरिश के लिए जीवन भर संघर्ष करें। ऐसा करने से ही समाज में समरसता बनी रहेगी।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
श्या०ऊ० सं० महावि० धुवसेना, पूर्णियाँ
०५।०१।२०

झारखंड द्वितीय खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ०द्वि०- पत्र
निबंधमाला - गद्य भाग
शीर्षक :- 'पेट'
Date: _____ Page: _____
लेखक - पंडित प्रताप नारायण मिश्र

प्रश्न:- 'पेट' शीर्षक निबंध का महत्व स्पष्ट करें।

उत्तर:- निबंधकार पंडित प्रताप नारायण मिश्र ने 'पेट' शीर्षक निबंध के माध्यम से कई महत्वपूर्ण तथ्यों को पाठकों के समक्ष रखा है। उनका कहना है कि पेट की महिमा अपरम्पार है। पेट पिण्ड से लेकर ब्रह्माण्ड तक को नियंत्रित करता है। पेट की इसी महत्ता को स्वीकार करते हुए भगवान श्रीकृष्ण ने अपना नाम दामोदर रखा था। पेट की सुन्दरता के कारण ही प्राचीनकाल में सुन्दरियाँ कृशोदरी कहलाती थी।

लेखक के कथनानुसार पेट की आँच बड़ी कड़ी होती है। इसे सहना बहुत कठिन है। अथक परिश्रम के बाद भी पेट का जुगाड़ न हो सके तो यह क्षुधा-यन्त्र नर्क का रूप धारण कर लेता है। इस पेट को भरने के लिए ही लोग देश-विदेश भटकते रहते हैं। परिवार के सदस्यों का पेट भरने के लिए ही हजारों लोग पलायन करने के लिए विवश हो जाते हैं।

इस देश में ऐसे लोग की भी कमी नहीं है जो दूसरों के पेट पर लात मारकर तरह-तरह के तिकड़म और धोखे से ढेर सारा धन अर्जित कर लेते हैं। इनका पेट कभी नहीं भरता है। बिना डकार लिए सब कुछ हजम कर जाते हैं। ये दूसरे को कुछ भी देने को तैयार नहीं होते हैं। लगता है जैसे इनका ही पेट सबसे बड़ा है।

ठगी और बेईमानी से धन एकत्र करने वाले कंजूसों को लेखक महोदय चेतावनी भी देते हैं। वे कहते हैं केवल धन बटोर कर उसे अपने ही स्वार्थ में जमा करते जाना कभी भी हितकर नहीं है। धनवानों को चाहिए कि वे दूसरों में भी उसे बाँटे। अन्यथा सम्भव है कि एक दिन ऐसी आग भड़केगी कि किसी को भी जलाये बिना नहीं छोड़ेगी।

धार्मिक दृष्टिकोण से भी पेट का काफी महत्व है। माताएँ अपनी संततियों को नौ मास अपने पेट में ढोती हैं, इसलिए धरती पर इनसे अधिक पूज्य दूसरा कोई देवी-देवता नहीं है।

इस प्रकार मिश्रजी कहना है कि जिनके पास

शेष आगे -

शास्त्री प्रथम खण्ड, रा० भाषा हिन्दी, अ०हि० - पत्र

जयद्रथ-वध

कवि - मैथिलीशरणगुप्त

तुम कौन हो, क्या कर रहे हो, क्या तुम्हारा कर्म है?
कैसा समय, कैसी दशा, कैसा तुम्हारा धर्म है?
हे अनघ! क्या वह विज्ञता भी आज तुमने दूर की?
होती परीक्षा ताप में ही स्वर्ण के सम शूर की।

भावार्थ

श्री कृष्ण पाण्डवों को समझा कर कह रहे हैं तुमको अपने ज्ञान का सहारा लेकर ही धैर्य धारण करना चाहिए और अभिमन्यु की मृत्यु का दुःख सहन करना चाहिए।

प्रस्तुत पद्यांश में भगवान श्रीकृष्ण कह रहे हैं कि तुम अपनी स्थिति पर पूर्ण रूप से विचार कर लो कि तुम कौन हो, क्या तुमको करना चाहिए। तुम्हारा कर्तव्य क्या है। यह कैसा समय है। इस समय तुम्हारी क्या दशा है। इस दशा में तुम्हारा क्या धर्म है। हे पुण्यात्मा तुमने हम सबकी बुद्धि को भी अपने से दूर भगा दिया है अर्थात् तुम्हारी बुद्धि तुम्हारे ही पास नहीं रही है। जिस स्वर्ण की परीक्षा अग्नि में होती है उसी प्रकार शूरवीर की परीक्षा भी दुःख पड़ने के समय में ही होती है।

इस पद में कवि ने कर्म के महत्व पर प्रकाश डाला है। कवि के कथनानुसार कर्म से तात्पर्य है जब मानव अपनी चित्तवृत्तियों को एकाग्र करके जीव और आत्मा का निश्छल सम्बन्ध स्थापित कर अन्तर और बाह्य को एकाकार करके जो काम करता है वही कर्म है।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा०कृ०सं० महावि० कुलसेना, पूर्णियाँ
अ०08/20